University in News on 12 September 2025

i-NEXT PAGE 5

एलयू में अब 28 सितंबर तक कर सकेंगे रजिस्ट्रेशन

LUCKNOW (11 SEP): लखनऊ विश्वविद्यालय ने आनलाइन कोर्सों में एडमिशन के लिए समय सीमा बढ़ा दी है. सेंटर फार आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के डायरेक्टर प्रोफेसर पियूष भार्गव ने बताया कि आनलाइन बीकाम, एमकाम, एमए इंग्लिश, इकोनामिक्स, संस्कृत, पालीटिकल साइंस, एमएसडब्ल्यू, बीबीए और एमबीए में अभी 12 तक रजिस्ट्रेशन और 15 सितंबर तक फीस जमा करने का समय दिया गया था. अब 28 सितंबर तक एडमिशन के लिए रजिस्ट्रेशन और 30 सितंबर तक फीस जमा करने की समय सीमा तय कर दी है.

JAGRAN CITY PAGE I

लौंग और संतरे के सेवन से 80 प्रतिशत तक कम हो सकता है लिवर कैंसर

अखिल सक्सेना • जागरण

लखनऊ: यदि आप लौंग, संतरे और मुसम्मी का नियमित सेवन करते हैं तो यह आपको 80 प्रतिशत तक लिवर कैंसर के खतरे से बचा सकता है। साथ ही, किडनी भी सुरक्षित रहेगी। लखनऊ विश्वविद्यालय के बायो केमिस्ट्री विभाग के प्रोफेसर सिद्धार्थ कुमार मिश्रा और उनकी टीम की ओर से बाल्ब (सफेद प्रजाति के चूहों) पर किए गए शोध में यह तथ्य सामने आए हैं। यह शोध पत्र इंग्लैंड के जर्नल आफ बायो केमिकल एंड मालीकुलर टाक्सीकोलाजी में प्रकाशित हुआ है। इस शोध में डा. हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर, मध्य प्रदेश से डा. सुबोध जैन और शोध छात्र डा. जावेद अहमद का भी सहयोग रहा है।

लवि के बायो केमिस्ट्री विभाग के प्रोफेसर सिद्धार्थ कुमार मिश्रा बताते हैं कि मध्य प्रदेश काउंसिल आफ साइंस एंड टेक्नोलाजी और उप्र उच्च शिक्षा विभाग से सेंटर आफ एक्सीलेंस के रूप में यह शोध प्रोजेक्ट 2023-24 में मिला था। इसमें उत्तर प्रदेश सरकार से 10 लाख 20 हजार और मध्य प्रदेश से 8 लाख 20 हजार रुपये की राशि मिली। वह बताते हैं कि पर्यावरण में बहुत से विषाक्त पदार्थ पाए जाते हैं। यह ज्यादातर गाड़ियों के धुएं, पेंट इंडस्ट्री और उर्वरक बनने वाले स्थान से आते हैं। पेंट की तीखी महक बहुत खतरनाक होती है। ये जहरीले तत्व वाष्पशील होते हैं। इसकी 10 मिली ग्राम से ऊपर की मात्रा शरीर में होने पर यह सांस से फेफड़ों में और आगे खून में पहुंच जाते हैं। ये सारे पदार्थ लिवर में जाते हैं, इससे कैंसर बनने लगता है। इस कैंसर के निदान के लिए यह शोध शुरू किया गया।

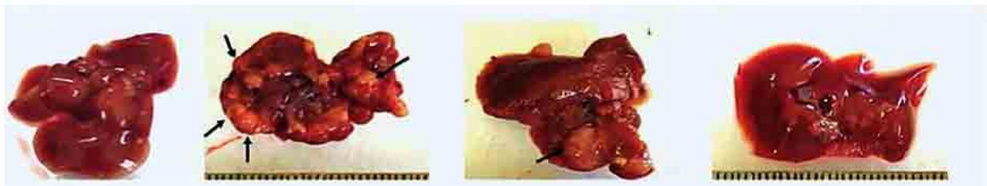

शोध के दौरान चूहे के लिवर की क्रमवार स्थिति • सौजन्य : लवि

प्रोफेसर सिद्धार्थ कुमार मिश्रा

किडनी के लिए भी फायदेमंद

लिवर कैंसर के बाद चूहों की किडनी पर भी इसका शोध किया गया। इसमें भी सफेद प्रजाति के चूहों के चार ग्रुप बनाकर उन विषाक्त पदार्थ की उतनी ही मात्रा दी गई। इससे किडनी का वजन दो गुणा बढ़ गया, जबकि डोज देने से पहले सामान्य किडनी का वजन ढाई ग्राम था। उसमें सूजन आ गई। रक्त की छन्नियां ब्लाक होने लगीं। सोडियम की मात्रा 75 प्रतिशत तक बढ़ गई। ब्लड प्रेशर भी गड़बड़ होने लगा। फिर वही हर्बल दवा की डोज दी गई, जिससे 90 प्रतिशत तक किडनी में सुधार हो गया।

10 लाख 20 हजार रुपये उत्तर प्रदेश सरकार से व आठ लाख 20 हजार की राशि मप्र सरकार से मिली थी शोध के लिए

ऐसे किया गया शोध

शोध में कैंसर पैदा करने वाले विषाक्त पदार्थ डाइ इथाइल नाइट्रोसामिन और कार्बन ट्रेटा क्लोराइड का प्रयोग किया गया। सफेद प्रजाति के चूहे लिए गए। चार ग्रुप में 10-10 चूहों को बांटा गया। इनके शरीर में डाइ इथाइल नाइट्रोसामिन और कार्बन ट्रेटा क्लोराइड की 10 प्रतिशत डोज छह सप्ताह तक दी गई। इससे चूहों का वजन तेजी से कम होने लगा। छह सप्ताह में इन चूहों को लिवर कैंसर हो गया। इससे इन विषाक्त पदार्थ का दुष्प्रभाव पता चला। उसके बाद बीटा-कैरियोफाइलिन कंपाउंड लिया जो लौंग, अच्छे महकने वाले मसालों, संतरे, मुसम्मी सहित अन्य खट्टे मीठे फलों में पाया जाता है। इसकी अधिकतम 300 मिलीग्राम मात्रा प्रतिदिन ले सकते हैं, लेकिन शोध में 30 मिलीग्राम की डोज छह सप्ताह तक चूहों को दी गई। उनके ट्यूमर में कमी आई और 80 प्रतिशत तक लिवर कैंसर भी ठीक हो गया।

रैंकिंग के लिए मौका

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने अंतर विभागीय रैंकिंग में शामिल होने के लिए विभागों को एक और मौका दिया है। गुरुवार को कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने बैठक कर एक सप्ताह और आवेदन की तिथि बढ़ाने पर सहमति दी। उन्होंने बताया कि कई विभाग दीक्षा समारोह की तैयारियों की वजह से रैंकिंग के लिए आवेदन नहीं कर पाए थे, उन्हें मौका दिया गया है। (जासं)

AMAR UJALA MY CITY PAGE 7

पीएचडी फीस में तीन गुना तक अंतर

ए प्लस-प्लस ग्रेड वाले लविवि में सबसे कम तो बी प्लस-प्लस ग्रेड वाले में सबसे ज्यादा

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। राजधानी के राज्य विश्वविद्यालयों में पीएचडी पाठ्यक्रम की फीस संरचना में भारी असमानता देखने को मिल रही है। विश्वविद्यालयों को भले ही एक जैसी डिग्री देनी हो, लेकिन शुल्क निर्धारण में हर संस्थान का अलग पैमाना है।

परिणामस्वरूप, एक ही शहर में छात्रों को तीन गुना तक अधिक फीस चुकानी पड़ रही है। इस भारी-भरकम शुल्क और वित्तीय सहायता के अभाव में अनेक योग्य छात्र पीएचडी से दूर हो रहे हैं, जिससे न केवल शोध की पहुंच सीमित हो रही है, बल्कि उसकी गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है।

शहर के तीन प्रमुख राज्य विश्वविद्यालयों

विवि का नाम	रेगुलर पीएचडी फीस	पार्ट-टाइम पीएचडी फीस(रुपये)
भाषा विश्वविद्यालय	32,500	57,500
राष्ट्रीय पुनर्वास विवि	24,500	90,000
लखनऊ विवि	10,126	52,580

लखनऊ विवि, डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विवि और ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विवि में पीएचडी की फीस में बड़ा अंतर है। लखनऊ विवि (जिसे ए++ ग्रेड प्राप्त है) में सबसे कम शुल्क लिया जा रहा है, जबकि ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय (बी++) में सबसे अधिक फीस वसूली जा रही है।

■ **एनईपी में शोध को प्राथमिकता, लेकिन फेलोशिप नहीं :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देने की बात कही गई है। चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के बाद अब छात्र सीधे पीएचडी में प्रवेश ले सकते हैं। बावजूद इसके, राज्य विश्वविद्यालयों में न तो फेलोशिप की सुविधा है, न ही किसी प्रकार की आर्थिक सहायता। केवल जेआरएफ उत्तीर्ण छात्र ही केंद्र सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त कर पाते हैं।